

द्वितीयांक में विशेष: -

- देवनागरी स्नातकोत्तर महाविद्यालय गुलावठी एवं तुलसी महाविद्यालय अनूपपुर के बीच MoU
- पृथ्वी दिवस पर वेबीनार
- अंतर्राष्ट्रीय जैव विविधता दिवस पर फोटोग्राफी चैलेंज
- हिंदी में सामाजिक विज्ञान अनुसंधान विषय पर दो दिवसीय राष्ट्रीय वेबीनार
- आठवीं विश्व योग दिवस पर योग शिविर का आयोजन
- नशा निवारण दिवस पर गोष्ठी
- ई कंटेंट डेवलपमेंट ट्रेनिंग
- शिक्षा एवं शोध सुविधा के विकास में महत्वपूर्ण सिद्ध होगा N-List
- कागज विहीन कार्यालय की दिशा में एक पहल -Google Workspace

संपादक प्रो. प्रीति वैश्य

कविता:-

- " सपनों की दुनिया "
 - डॉ. श्वेता श्रीवास्तव
- " दहेज : एक कुप्रथा "
 - डॉ. तरन्नुम सरबत

आलेख

- ा. " शिक्षा या एजुकेशन " -
 - कमलेश चावले
- 2. " विश्व पर्यावरण दिवस ५ जून पर्यावरण संरक्षण " -
 - डॉ. ब्रजेंद्र सिंह
- 3. " प्रवेश: सत्र २०२२-२३ " -
 - डॉ. अमित भूषण

संरक्षेक डॉ . विक्रम सिंह बघेल

"तिपान बुलेटिन"

(त्रैमासिक डिजिटल समाचार पत्रिका)

(अप्रैल - जून 2022)

<u>संपादक - मंडल</u>

<u>संरक्षक –</u> प्राचार्य

संपादक - श्रीमती प्रीति वैश्य

सह संपादक - श्रीमती संगीता बासरानी

सदस्य - श्री विनोद कुमार कोल

सदस्य - सुश्री पूनम धांडे

सलाहकार मंडल

डॉ. अमित भूषण द्विवेदी

ज्ञान प्रकाश पाण्डेय

शाहबाज़ खान

तकनीकी सहायता

- सुश्री संगीता राठौर

आमंत्रण - तिपान बुलेटिन के आगामी प्रकाशन के लिए अपना लेख , रिपोर्ट , कविता , विभागीय गतिविधियां , उपलब्धियां आदि नीचे दी गई ई - मेल आई.डी. पर प्रेषित करें e-mail ID - newsletter@gtcanuppur.ac.in

©सर्वधिकार सुरक्षित

प्रकाशक – आन्तरिक गुणवत्ता आश्वासन प्रकोष्ठ शासकीय तुलसी महविद्यालय अनूपपुर (म.प्र.)

<u>संपादकीय</u>

प्रत्येक व्यक्ति के सम्पूर्ण जीवन काल में सर्वाधिक महत्वपूर्ण समय उसका विद्यार्थी जीवन होता है। विद्यार्थी अवस्था ही मानव में अंतर्निहित क्षमताओं के विकास का सर्वोत्तम समय होता है और शिक्षा व्यक्ति को जीवन जीने की कला सिखाती है। म.प्र. शासन ने विद्यार्थियों के सर्वांगीण विकास के उद्देश्य से गत वर्ष 1 जुलाई 2021 से उच्च शिक्षा में परिवर्तन करते हुए नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति को लागू किया है। इस नवीन शिक्षा नीति में शिक्षण पद्धित में बदलाव करते हुए, पाठ्यक्रम को इस प्रकार तैयार किया गया है, जिससे विद्यार्थी में ज्ञान व कौशल विकास के साथ ही उनकी योग्यता एवं व्यवहारिक समझ भी विकसित हो सके।

शासकीय तुलसी महाविद्यालय पिछले 50 वर्षों से इस अनुसूचित जनजाति बहुल क्षेत्र के युवाओं को शिक्षित कर रहा है। महाविद्यालय गुणवत्तापूर्ण शिक्षा, लैंगिक संवेदीकरण,समानता व सुरक्षा का वातावरण उपलब्ध कराने के साथ ही पर्यावरण संरक्षण,मानवीय मूल्यों व सामाजिक दायित्वों के प्रति अपनी भागीदारी सुनिश्चित करता है। यहां कला, वाणिज्य एवं विज्ञान तीनों संकायों में स्नातक व प्रमुख विषयों में स्नातकोत्तर के शिक्षण कार्य के साथ ही छात्र छात्राओं के सर्वांगीण विकास के लिए विभिन्न सांस्कृतिक, साहित्यिक व खेल गतिविधियाँ संचालित होती रहती हैं। वर्तमान समय में 'आत्मिनर्भर भारत ' की संकल्पना , 'नई शिक्षा नीति' व अध्ययन- अध्यापन के क्षेत्र में हो रहे नवाचारों से प्रेरित होकर तुलसी महाविद्यालय भी कुछ तकनीकी कुछ व्यवहारिक अभिनव प्रयोगों के साथ छात्रों के विकास हेतु प्रयासरत् है । कोरोना काल के बाद से ही महाविद्यालय ने गूगल क्लास , गूगल मीटिंग, वेबिनार जैसे ऑनलाइन शैक्षणिक माध्यमों को अपनाकर एक नई शुरुआत की है । N-List (Online Library) हो या प्रत्येक विभाग के लिए Google Workspace जैसी नवीन तकनीक को अपनान के साथ ही वृक्षारोपण, रक्तदान, मतदाता जागरूकता जैसे सामाजिक सरोकारों के लिये भी महाविद्यालय परिवार निरंतर योगदान दे रहा है।

इन्हीं प्रयासों की कड़ी में महाविद्यालय का डिजिटल न्यूज लेटर "तिपान - बुलेटिन" अपने द्वितीय संस्करण में महाविद्यालय की गतिविधियों व उपलब्धियों के साथ प्रस्तुत है।

> प्रो. प्रीति वैश्य सहा. प्रा. अर्थशास्त्र शास . तुलसी महावि. अनूपपुर

शिक्षण तथा शोध क्षेत्र में नया आयाम विकसित करने बुलन्दशहर व अनूपपुर के तुलसी

महाविद्यालय के मध्य एम.ओ.यू. पर हुए हस्ताक्षर - ऑनलाईन जूम मीटिंग द्वारा प्राध्यापकों
ने किया विचार विमर्श

_05-अप्रैल-2022

अनूपपुर जिले के अग्रणी शासकीय तुलसी महाविद्यालय द्वारा अकादिमक उन्नयन और उत्कृष्टता प्राप्त करने के लिए उत्तर प्रदेश के बुलन्दशहर में स्थित देवनागरी स्नातकोत्तर महाविद्यालय, गुलावठी के मध्य एक समझौता ज्ञापन (एम.ओ.यू.) पर हस्ताक्षर किया गया। दोनों महाविद्यालयों के प्राचार्यों ने आपसी सहमित के आधार पर इस समझौते को वर्चु अल माध्यम से जूम प्लेटफार्म पर मूर्त रूप प्रदान किया। ऑनलाइन प्लेटफॉर्म जूम मीटिंग पर हुए इस समझौता ज्ञापन के माध्यम से दोनों संस्थानों ने शिक्षण तथा अधिगम में नए प्रयोग करने, एक दूसरे के फैकेल्टी तथा छात्रों को आधिकारिक विजिट पर बुलाने, शोध, प्रोजेक्ट कार्य तथा नई शिक्षा नीति को लागू करने तथा नैक मूल्यांकन हेतु परस्पर विशेषज्ञता का आदान प्रदान करने के लिए साझा रणनीति तैयार करने पर बल दिया है। देवनागरी महाविद्यालय के प्राचार्य प्रो. योगेश कुमार त्यागी ने कहा कि इससे शिक्षण तथा शोध के क्षेत्र में सहयोग का नया आयाम विकसित होगा।

इस अवसर पर शासकीय तुलसी महाविद्यालय के प्राचार्य डॉ. विक्रम सिंह बघेल ने कहा कि यह एक बेहद सराहनीय प्रयास है इस समझौते के पश्चात दोनों महाविद्यालयों के मध्य विचारों का स्वतंत्र रूप से आदान प्रदान हो सकेगा एवं अकादिमक गतिविधियों में पारस्परिक सहयोग प्रदान करेंगे। जिससे महाविद्यालय के नैक मूल्यांकन के प्रयास को एक नई गति प्राप्त होगी। इससे इस सूदूरवर्ती जनजातीय बहुल क्षेत्र के छात्र / छात्राओं को अधिक अवसर प्राप्त हो सकेगा। शासकीय तुलसी महाविद्यालय अनूपपुर के प्राचार्य प्रो. विक्रम सिंह बघेल ने कहा कि इस अवसर पर डी एन महाविद्यालय के आई क्यू ए सी के संयोजक पीयूष त्रिपाठी तथा शासकीय तुलसी महाविद्यालय के आई क्यू ए सी के संयोजक पीयूष त्रिपाठी तथा शासकीय तुलसी महाविद्यालय के आई क्यू ए सी के संयोजक डॉ. अमित भषण द्विवेदी उपस्थित रहे। संचालन प्रीती वैश्य ने किया।





"युवा संवाद" कार्यक्रम में शामिल हुए तुलसी महाविद्यालय के छात्र/छात्राएं

6 अप्रैल 2022

माननीय मुख्यमंत्री श्री शिवराज सिंह चौहान के आतिथ्य में "युवा संवाद" एकदिवसीय कार्यक्रम का सफल आयोजन 6 अप्रैल 2022 को कुशाभाऊ ठाकरे सभागार, भोपाल में किया गया। इस कार्यक्रम का प्रसारण ऑनलाइन माध्यम से भी किया गया। शासकीय अग्रणी तुलसी महाविद्यालय अनूपपुर के प्राचार्य डॉ. विक्रम सिंह बघेल के संरक्षण एवं मार्गदर्शन में महाविद्यालय के समस्त प्राध्यापक, सहायक प्राध्यापक, अतिथि विद्वान और छात्र/छात्राओं ने ऑनलाइन माध्यम जुड़कर इस कार्यक्रम में सहभगिता की। इसी कार्यक्रम में तुलसी महा. की छात्र/छात्राएं साक्षी पाठक , स्नेहा, जानकी, गोमती, गोमती पेंड्राम ,आरती सिंह, संतोष कुमार, नंद कुमार, और शासकीय महा. वेंकटनगर से प्रभाकर माँझी, टीपी शुक्ला महा. वेंकटनगर से तृप्ति मिश्रा, कल्याणिका महा. अमरकंटक से अमन त्रिवेदी ने तुलसी महा. के प्रो. ज्ञान प्रकाश पांडेय और प्रो. विनोद कुमार कोल के नेतृत्व में अनूपपुर कलेक्ट्रेट परिसर स्थिति NIC के माध्यम से इस कार्यक्रम से जुड़कर सहभागिता की।



शासकीय तुलसी महाविद्यालय अनूपपुर में पशुपालन एवं डेयरी विभाग का युवा संवाद कार्यक्रम सम्पन्न

_21 अप्रैल 2022

शासकीय तुलसी महाविद्यालय अनूपपुर में प्राचार्य डॉ. विक्रम सिंह बघेल के संरक्षण में 21 अप्रैल 2022 को आत्मिनर्भर मध्यप्रदेश रोडमैप के अंतर्गत युवा संवाद कार्यक्रम का आयोजन पशुपालन एवं डेयरी विभाग अनूपपुर के सहयोग से किया गया। इस युवा संवाद कार्यक्रम में विकासखंड पशु चिकित्सा अधिकारी डॉ. वाई. सी. दीक्षित और पशु चिकित्सा शल्यज्ञ अधिकारी डॉ. रिश्म देवी चंद्राकर के द्वारा महाविद्यालय के छात्र/छात्राओं के साथ संवाद स्थापित कर पशुपालन एवं डेयरी उद्योग के विषय मे विस्तारपूर्वक समझाया गया।इस कार्यक्रम को सफलतापूर्वक सम्पन्न करने में महाविद्यालय के प्रो. विनोद कुमार कोल, प्रो. संगीता बासरानी और डॉ. तरन्नुम सरवत का विशेष योगदान रहा।





पृथ्वी दिवस पर किया गया वेबिनार का आयोजन

22 अप्रैल 2022

आर्थिक परिषद, अर्थशास्त्र विभाग, शासकीय तुलसी महाविद्यालय, अनूपपुर द्वारा 22 अप्रैल 2022 को विश्व पृथ्वी दिवस के अवसर आमन्त्रित व्याख्यान का आयोजन किया गया। आमन्त्रित व्याख्यान में देवनागरी स्नातकोत्तर महाविद्यालय, गुलावठी, बुलन्दशहर के राजनीति विज्ञान के सहायक प्राध्यापक पीयूष त्रिपाठी ने पृथ्वी दिवस के निहितार्थ, लक्ष्य, उद्देश्य एवं हमारे कर्तव्य विषय पर व्याख्यान देते हुए कहा कि हमारे ग्रह को बेहतर जगह बनाने के लिए व्यक्तियों, नागरिक समाज, उद्योगों तथा सरकारों को मिलकर काम करना होगा। उन्होंने प्लास्टिक से होने वाले प्रदूषण, जैव विविधता, पर्यावरणीय न्याय, खाद्यान्न धारणीयता तथा वायु प्रदूषण के संदर्भ में पृथ्वी दिवस मनाने के औचित्य पर प्रकाश डाला। संगीता बासरानी सहायक प्राध्यापक जंतु विज्ञान,शासकीय तुलसी महाविद्यालय अनूपपुर ने अपने व्याख्यान में पृथ्वी दिवस के इतिहास पर प्रकाश डाला। प्राचार्य प्रो0 विक्रम सिंह बघेल ने कहा कि पृथ्वी को जीव हितैषी बनाने के लिए मानव और प्रकृति का सहकार आवश्यक है।

इस कार्यक्रम में डॉ. मनमोहन लाल,सहायक प्राध्यापक, अर्थशास्त्र, जी.एस. एस. पीजी कॉलेज,कोयलसा आजमगढ़ तथा डॉ. धर्मेंद्र यादव, सहायक प्राध्यापक वाणिज्य,राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय अलापुर,अंबेडकर नगर की उपस्थिति रही।

कार्यक्रम का आयोजन एवं संचालन आर्थिक परिषद,अर्थशास्त्र विभाग के समन्वयक डॉ. अमित भूषण द्विवेदी ने किया। इस कार्यक्रम में मध्य प्रदेश और उत्तर प्रदेश के विद्यार्थियों की उपस्थिति रही।

वेबसाइट लिंक/

https://sites.google.com/d/1GGIUlfyfLhsicb7AryBQb_I5WtmXce0G/p/1dmhdfT23-Ifpk4sUWvN3iuYJ0plgc3zG/edit



आर्थिक परिषद,अर्थशास्त्र विभाग,शासकीय तुलसी महाविद्यालय अनूपपुर(म.प्र.)

दिनांक-22 अप्रैल 2022 समय-संध्या 7 बजे गूगल मीट

लिंक-https://meet.goo gle.com/fqf-kpjp-rad

आयोजक-आर्थिक परिषद, अर्थशास्त्र विभाग, शासकीय तुलसी महाविद्यालय अनूपपुर

आमंत्रित व्याख्यान माला-06 पृथ्वी दिवस के निहितार्थ, लक्ष्य,उद्देश्य और हमारे कर्तव्य



Gracious Presence: (1), Dr.Manmohan Lal, Assistant Professor Economics, GSS PG College, Koylsa, Azamgart
(2), Dr. Dharmendra-Yadav, Assistant Professor Commerce, Govt. PG College Alapur, Ambedkar Nagar(U.P.),

शासकीय तुलसी महाविद्यालय में " कॉलेज चलो अभियान" -

01 से 15 मई 2022

शासकीय तुलसी महाविद्यालय अनूपपुर में उच्च शिक्षा विभाग मध्यप्रदेश शासन के अंतर्गत महाविद्यालय के संरक्षक एवं प्राचार्य डॉ. विक्रम सिंह बघेल के मार्गदर्शन में "कॉलेज चलो अभियान" चलाया जा रहा है। इस अभियान के अंतर्गत अनूपपुर जिले के शासकीय एवं अशासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों में तुलसी महाविद्यालय के प्रो. डॉ. तरन्नुम सरवत , संजीव द्विवेदी, सूरज पारवानी, डॉ. दीपक गुप्ता, डॉ. शैली अग्रवाल, प्रज्ञा तिवारी , नंदलाल गुप्ता , सत्येन्द्र सिंह चौहान आदि के द्वारा सत्र 2022-23 में प्रवेश लेने वाले विद्यार्थियों को राष्ट्रीय शिक्षा नीति के अंतर्गत ऑनलाइन ई-प्रवेश की प्रक्रिया और राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020 से अवगत कराया जा रहा है। साथ ही महाविद्यालय में संचालित छात्र/छात्राओं के लिए कल्याणकारी शासकीय योजनाओं जैसे-गाँव की बेटी योजना, प्रतिभा किरण योजना, विक्रमादित्य पोस्टमैट्रिक स्कालरिशप योजना, मेधावी छात्र योजना आदि विभिन्न योजनाओं के बारे में विस्तृत जानकारी प्रदान की गई। इस कॉलेज चलो अभियान के संयोजक प्रो. डॉ. गीतेश्वरी पांडेय और सहसंयोजक प्रो.विनोद कुमार कोल है यह अभियान 15 मई तक चलाया जाएगा। https://www.raajdhaninews.com/267806/





" तुम्हें अंदर से बाहर की तरफ विकसित होना है , कोई तुम्हें तबतक शिक्षित नहीं कर सकता जबतक तुम खुद से प्रयास न करो।"

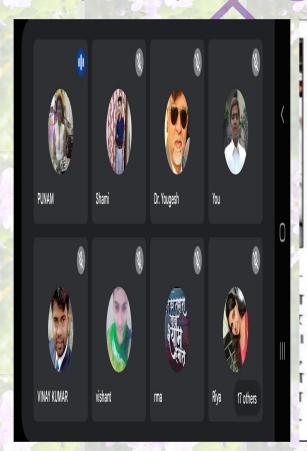
- स्वामी विवेकानंद

देवनागरी महाविद्यालय गुलावठी (उ.प्र.) द्वारा आयोजित एक दिवसीय राष्ट्रीय वेबीनार में असिस्टेंट प्रोफेसर पूनम धाण्डे ने निभाई मुख्य वक्ता की भूमिका--

10 मई 2022

राजनीति विज्ञान विभाग, देवनागरी महाविद्यालय द्वारा आजादी का अमृत महोत्सव तथा मिशन शक्ति अभियान के अंतर्गत 1857 की क्रांति में महिलाओं का योगदान विषय पर एक वेबिनार का आयोजन गूगल मीट पर या गया। वेबिनार में मुख्य वक्ता के रूप में उपस्थित रही शासकीय तुलसी महाविद्यालय, अनूपपुर की इतिहास विभाग की असिस्टेंट प्रोफेसर पूनम धांडे ने कहा कि 1857 की क्रांति का नेतृत्व झाँसी की रानी लक्ष्मीबाई तथा लखनऊ की बेगम हज़रत महल जैसी वीरांगनाओं द्वारा किया गया। उन्होंने कहा कि रानी लक्ष्मीबाई के साथ झलकारी बाई जैसी योद्धाओं ने कदम से कदम मिलाकर स्वाधीनता संग्राम की लड़ाई लड़ी थी। क्रांति के प्रतीक रोटी और कमल के प्रचार का प्रमुख माध्यम महिलाएं ही थी। कार्यक्रम की अध्यक्षता कर रहे प्राचार्य प्रो॰ योगेश कुमार त्यागी ने कहा कि मेरठ में क्रांति की शुरुआत महिलाओं द्वारा क्रांति करियों को ललकारने के बाद की गयी थी। यद्यपि अपनी सीमाओं के कारण हर जगह समान रूप से सक्रिय नहीं रह सर्कीं, फिर भी असैन्य सेवा के द्वारा उन्होंने क्रांतिकारियों के मनोबल को ऊंचा बनाए रखा।

इसके पूर्व कार्यक्रम की रूपरेखा प्रस्तुत करते हुए डॉ पुष्पेंद्र कुमार मिश्र ने कहा कि 1857 की क्रांति में समाज के सभी वर्गों की भागीदारी रही। इसमें समाज के सबसे कमजोर वर्गों किसानों, छोटे जमींदारों, आदिवासियों तथा तथा महिलाओं ने एक शोषणपरक व्यवस्था के विरुद्ध मिलजुलकर विद्रोह किया। कार्यक्रम का संचालन करते हुए पीयूष त्रिपाठी ने कहा कि क्रांतिकारियों का मनोबल बढ़ाने के लिए उन्होंने अपने गहने तक बेच दिये थे। धन्यवाद ज्ञापन डॉ। विनय कुमार सिंह ने किया। इस अवसर पर डॉ अवधेश कुमार सिंह, डॉ अमित भूषण द्विवेदी, विनीता गर्ग, भवनीत सिंह बत्रा, संदीप कुमार सिंह, नरेश कुमार तथा बड़ी संख्या मे छात्र छात्राएं मौजूद रहे।



1857 की क्रांति में महिलाओं के योगदान पर की चर्चा

गुलावठी। डीएनपीजी कॉलेज में आजादी के अमृत महोत्सव तथा मिशन शक्ति अभियान के अंतर्गत 1857 की क्रांति में महिलाओं का योगदान विषय पर एक वेबीनार का आयोजन किया गया। मुख्य वक्ता शासकीय तुलसी महाविद्यालय अनूपपुर की इतिहास विषय की असिस्टेंट प्रोफेसर पूनम धांडे ने कहा कि 1857 की क्रांति का नेतृत्व झाँसी की रानी लक्ष्मीबाई तथा लखनऊ की बेगम हजरत महल जैसी वीरांगनाओं द्वारा किया गया। प्राचार्य प्रो. योगेश कुमार त्यागी ने कहा कि मेरठ में क्रांति की शुरुआत महिलाओं द्वारा क्रांतिकारियों को ललकारने के बाद की गई थी। डॉ. पृष्पेंद्र कुमार मिश्र ने कहा कि 1857 की क्रांति में समाज के सभी वर्गों की भागीदारी रही। इस मौके पर पीयूष त्रिपाठी, डॉ. अवधेश कुमार सिंह, पीयूष त्रिपाठी, डॉ. विनय कुमार सिंह मौजूद रहे। संवाद

विश्व जैव-विविधता दिवस के अवसर पर फोटोग्राफी चैलेंज प्रतियोगिता का आयोजन

22 मई 2022

दिनाँक 22.05.2022 को विश्व जैव-विविधता दिवस के अवसर पर महाविद्यालय की आंतरिक गुणवत्ता आश्वासन प्रकोष्ठ एवं एन. एस. एस. इकाई के संयुक्त तत्वावधान में 'जैव-विविधता जागरूकता अभियान' के अंतर्गत फोटोग्राफी चैलेंज प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। फोटोग्राफी चैलेंज प्रतियोगिता का संयोजन प्रो.पूनम धांडे ने किया। इस प्रतियोगिता हेतु महाविद्यालय में पदस्थ कर्मचारियों एवं अधकारियों सहित महाविद्यालय में अध्ययनरत छात्र-छात्राओं से अपने आस-पास के जैव-विविधता को परिभाषित करने वाली फोटो भेजने का आमन्त्रण दिया गया था। प्रतियोगिता में भाग लेने के लिए कुल 20 पंजीकरण प्राप्त हुए , प्राप्त फोटोग्राफ्स को IQAC के माध्यम से महाविद्यालय की वेबसाइट, ट्विटर एवं फेसबुक पेज पर प्रकाशित किया गया। विजेता की सूची तैयार करने के लिए निर्णायक मंडल में निम्न पदाधिकारी शामिल रहें.......

- 1. डॉ. प्रीतिसागरमलैया–सहा.प्राध्या. (वनस्पतिशास्त्र)
- 2. प्रो. संगीताबासरानी-सहा.प्राध्या. (प्राणीशास्त्र)
- 3. प्रो. विनोदकुमारकोल-सहा.प्राध्या. (समाजशास्त्र)
- 4. प्रो. ज्ञानप्रकाशपाण्डेय -सहा.प्राध्या. (समाजशास्त्र)

विजेताओं की सूची इस प्रकार है....

- 1 शिवम गुप्ता B.A.Ist year
- 2 संजू यादव B.A.Ist year
- 3 <mark>कुसुम</mark> केवट B.sc. II nd year
- 4 सेजल गुप्ता B.sc. II nd year

- 1- शाहबाज़ खान सहायक प्राध्यापक (वाणिज्य)
- 2- कमलेश चावले सहायक प्राध्यापक (राजनीतिशास्त्र)
- 3- शैली अग्रवाल सहायक प्राध्यापक (वनस्पति शास्त्र)



SHIVAM GUPTA -I st



KUSUM KEWAT-III rd



SANJU YADAV-II nd



Shahbaz Khan – I st



Kamlesh Chawale – II



Dr. ShailyAgrawal- III rd

विश्व जैवविविधता दिवस पर शास. तुलसी कॉलेज में एक दिवसीय वेविनार सम्पन्न-

_22 मई 2022

शासकीय तुलसी माविद्यालय अनुपपुर में प्राचार्य, डॉ. विक्रम सिंह बघेल जी के संरक्षण में "जैविविविधता के समक्ष उत्पन्न चुनौतियाँ, कारण एवं निवारण" विषय पर एक दिवसीय वेविनार का आयोजन वनस्पित शास्त्र विभाग एवं आन्तरिक गुणवत्ता एवं आश्वासन प्रकोष्ठ द्वारा किया गया | बेविनार का संयोजन डॉ. पी. एस. मूलैया एवं डॉ. शैली अग्रवाल द्वारा किया गया | कार्यक्रम के प्रथम, वक्ता डॉ. अनुपमा सिंह, सहा. प्राध्या. भूगोल, के.एस. साकेत पी.जी. कालेज अयोध्या ने जैविविविधता का अर्थ परिभाषा एवं उसमे हर जीव के महत्व को समझाया । अगले वक्ता डॉ. शेरेन्द्र कुमार साहू सहा. प्राध्या. जंतु विज्ञान शा. विवेकानंद पी.जी. कालेज मैहर जिला-सतना द्वारा जैविविविधता संकट निवारण के नीतिगत उपाय पर अपने विचार रखें कार्यक्रम के अंतिम वक्ता डॉ. वेद प्रकाश वेदी सहा.प्राध्या. भूगोल पीजी के.एस. साकेत पी.जी. कालेज अयोध्या (उ.प्र.) ने जैविविविधता से जुड़े तकनीकी पहलुओं से अवगत कराया। कार्यक्रम में तकनीकि सहयोग एवं मार्गदर्शन डॉ. अमित भूषण द्ववेदी (IQAC) सहा. प्राध्या. अर्थशास्त्र द्वारा दिया गया इसके अतिरिक्त कार्यक्रम से श्री संजीव द्विवेदी, सुश्री प्रज्ञा तिवारी, डॉ. रेखा वर्मा, सुश्री छाया सैयाम एवं समस्त स्टाफ, छात्राएं कार्यक्रम से जुड़े एवं अपना सहयोग प्रदान किया।



वन मण्डल अनूपपुर मे जैव विविधता पर कार्यकम मे तुलसी महाविद्यालय के सहायक प्राध्यापको ने दिये व्याख्यान

22 मई 2022

अंतरराष्ट्रीय जैव विविधता दिवस के अवसर पर अनूपपुर वन मंडल द्वारा 22 मई को जैव विविधता दिवस के अवसर पर " सभी को जीवन के लिये साझा भविष्य का निर्माण "थीम पर जागरूकता कार्यक्रम आयोजित किया गया। इस दौरान जिला मुख्यालय अनूपपुर में वन परिक्षेत्र स्तरीय कार्यक्रम में उप वन मंडल अधिकारी अनूपपुर के.वी. सिंह, तुलसी महाविद्यालय अनूपपुर के सहायक प्रोफेसर अजयराज सिंह राठौर, संगीता बसरानी, वन्यप्राणी संरक्षक शिश्वर अग्रवाल, वन परिक्षेत्र अधिकारी तरुण डेहिरिया, विशेष कर्तब्य अधिकीरी कल्याण सिंह मार्कों एवं विभिन्न वन समितियों के पदाधिकारियों, सदस्य उपस्थित रहे। कार्यक्रम में मानव जीवन के लिए वनों तथा वन्य प्राणियों के साथ प्राकृतिक वातावरण का संतुलन बनाए रखने हेतु वन, वन्य प्राणियों जीव-जंतुओ, जल संरक्षण के संबंध में विस्तृत जानकारी देते हुए पर्यावरण संरक्षण पर जोर दिया गया। प्रो संगीता बासरानी ने अपने वक्तव्य मे कहा कि मनुष्य अपने आने वाली पीढ़ियों को शुद्ध वातावरण दे सके इसलिए प्रकृति का संरक्षण आवश्यक है। प्रो अजयराज सिंह राठोर ने जैवविविधता से संबन्धित आधारभूत संरचना की जानकारी दी।



प्राध्यापकों ने सीखे ई- कंटेंट निर्माण के गुर

_ 23 मई से 11 जून 2022

प्रदेश के महाविद्यालयों में प्राध्यापकों की कमी एवं कोरोना काल जैसी परिस्थितियों में कक्षाओं के संचालन में आने वाली चुनौतियों के समाधान के लिए उच्च शिक्षा विभाग द्वारा ई- कंटेंट निर्माण का महत्वपूर्ण कार्यक्रम प्रारंभ किया गया है। जिसका उद्देश्य विद्यार्थियों को डिजिटल प्लेटफार्म के माध्यम से गुणवत्तापूर्ण अध्ययन सामग्री उपलब्ध कराना है। इस कार्यक्रम के अंतर्गत 23 मई से प्रारम्भ होकर 11 जून तक कुल 18 दिवसों में सम्पन्न हुई ई-कंटेंट डेवलपमेंट ऑनलाइन ट्रेनिंग में शासकीय तुलसी महाविद्यालय के सहायक प्राध्यापकों डॉ. प्रीति सागर मलैया, डॉ. गीतेश्वरी पाण्डेय, प्रो. संगीता बासरानी, प्रो. प्रीति वैश्य, प्रो. पूनम धांडे एवं ज्ञान प्रकाश पाण्डेय ने विषय विशेषज्ञों से पावर पाइंट आधारित ई कंटेंट निर्माण का प्रशिक्षण प्राप्त किया। उच्च शिक्षा विभाग द्वारा अब तक विभिन्न विषयों के 800 से भी ज्यादा वीडियो लेक्चर तैयार कर लिए गए हैं जो विभाग के एल एम एस पोर्टल पर उपलब्ध है। ई कंटेंट डेवलपमेंट के तकनीकी प्रशिक्षण को प्राप्त कर अब महाविद्यालय के प्राध्यापक भी नई शिक्षा नीति को लागू करने एवं विद्यार्थियों को गुणवत्तापूर्ण शिक्षण सामग्री उपलब्ध कराने में योगदान कर सकेंगे। इस प्रशिक्षण से तुलसी महाविद्यालय अनूपपुर और इस जनजातीय अंचल के साथ प्रदेश के सभी छात्र/ छात्राएं लाभान्वित हो सकेंगे।



देवनागरी महाविद्यालय गुलावठी के साथ एम ओ यू के बाद संपन्न हुआ पहला संयुक्त वेबीनार

_26-27 मई 2022

शासकीय तुलसी महाविद्यालय, अनूपपुर तथा देवनागरी महाविद्यालय, गुलावठी के आंतरिक गुणवत्ता सुनिश्चयन प्रकोष्ठ के संयुक्त तत्त्ववाधन में 'हिंदी में सामाजिक विज्ञान अनुसंधान: अवसर, चुनौतियां एवं संभावनाएं विषय पर दो दिवसीय राष्ट्रीय वेबिनार का आयोजन जूम प्लेटफार्म पर किया गया। वेबीनार को चार सत्रों में विभाजित किया गया था। प्रथम सत्र में अम्बेडकर विश्वविद्यालय दिल्ली के सेंटर फॉर रिसर्च एंड आर्काइव इन इंडिया एंड इंडीजीनस नॉलेज एंड लैंग्वेज सिस्टम एकेडिमक फेलो डॉ रमाशंकर सिंह ने 'हिंदी में समाज विज्ञान क्यों?' विषय पर अपना व्याख्यान प्रस्तुत करते हुए कहा कि भाषा अगर विश्व की समझने का माध्यम है, तो इसमें मातृभाषा की प्राथमिक भूमिका है। उन्होंने कहा कि ज्ञान का संबंध भाषा से अधिक चिंतन परंपराओं से है। चिंतन किसी भी भाषा में हो सकता है। हिंदी के समक्ष अक्सर यह प्रश्न उठाया जाता है कि क्या ज्ञान की रचना हिंदी में संभव है? उन्होंने कहा वास्तव में किसी समाज की संरचना तथा उसके मर्म को उसकी भाषा में ही समझा जा सकता है, किसी दुभाषिये की मदद से नहीं। उपनिवेशवाद ने एशियाई और अफ्रीकी समुदायों को सांस्कृतिक प्रभुत्व के द्वारा यह समझाया कि उनकी भाषा में समाज विज्ञान की रचना संभव नहीं है। उसने विजित क्षेत्रों की भाषाई पहचान का अवमूल्यन किया और ज्ञान पर एकाधिकार कर लिया। उन्होंने भारत का उदाहरण देते हुए कहा कि राजनीतिक तथा मुक्ति के आंदोलन हिंदी भाषा में हुए हैं, चाहे वह किसान आंदोलन हो, पर्यावरण आंदोलन हो, सामाजिक न्याय के आंदोलन हों अथवा अन्य छोटे-छोटे मुक्ति आंदोलन हों, उनकी भाषा और उनके मुहावरे हिंदी में ही रहें हैं। हिंदी में समाज विज्ञान का सामाजिक मूल्य है तथा इसका सम्मानित भविष्य भी है।

दूसरे सत्र को संबोधित करते हुए विश्व भारती विश्वविद्यालय, कोलकाता के इतिहास विभाग के प्रोफेसर एवं विभागाध्यक्ष हितेंद्र पटेल ने 'हिंदी में समाज विज्ञान लेखन: समस्याएं एवं समाधान' विषय पर श्रोताओं को संबोधित करते हुए कहा कि हिंदी में समाज विज्ञान लेखन के लिए शब्दों तथा मुहावरों का विस्तार करना होगा। इसके लिए हमें दूसरी भाषाओं से उदारता से शब्दों को ग्रहण करना होगा। उन्होंने कहा कि शब्दों का प्रयोग तथा वाक्य की संरचना के लिए लगातार प्रयोग करने होंगे। हिंदी तथा मातृभाषा में सोचना उस समाज के मर्म को जानने का बेहतर साधन होता है। उन्होंने कहा कि भाषा के स्तर पर एक नया युग शुरू हो रहा है। आने वाले तीन चार दशकों के अंतर्गत अंग्रेजी का वर्चस्व ट्रटेगा तथा भारतीय भाषाओं के प्रभाव में बढ़ोतरी दिखाई देगी।

वेबीनार के दूसरे दिन तीसरे सत्र में सतीश चंद्र कॉलेज बिलया के इतिहास विभाग के असिस्टेंट प्रोफेसर डॉ शुभनीत कौशिक ने 'उत्तर भारत के पुस्तकालय और अभिलेखागार' विषय पर व्याख्यान को संबोधित करते हुए इतिहास लेखन के लिए अभिलेखागारों के महत्व पर प्रकाश डाला। उन्होंने कहा कि ब्रिटिश काल में स्थापित अभिलेखागार उस समय के इतिहास तथा समाज विज्ञान को जानने का प्रमुख साधन है। उन्होंने राष्ट्रीय आंदोलन से संबंधित शोध के लिए विभिन्न संदर्भ ग्रंथों का परिचय दिया। उन्होंने पूर्वी उत्तर प्रदेश तथा बिहार के विभिन्न अभिलेखागारों के बारे में विस्तार से वर्णन किया तथा उत्तर भारत के प्रमुख अभिलेखागारों के बारे में जानकारी दी। उन्होंने इंटरनेट के माध्यम से बन रहे नए सन्दर्भ ग्रंथों का श्रोताओं से परिचय कराया।

चतुर्थ सत्र को संबोधित करते हुए अंबेडकर स्कूल आफ सोशल साइंसेज, बाबा साहब भीमराव अंबेडकर विश्वविद्यालय, लखनऊ के समाजशास्त्र के असिस्टेंट प्रोफेसर डॉ अजय कुमार ने 'हिंदी में समाज विज्ञान लेखन: प्रकाशन एवं ज्ञान की निर्मिति' विषय पर व्याख्यान दिया। उन्होंने कहा कि हिंदी में समाज विज्ञान के क्षेत्र में स्तरीय लेखन से लेकर सतही लेखन एवं प्रकाशन किया जा रहा है। पाठकों के समक्ष सबसे बड़ी चुनौती ज्ञान के स्रोत को पहचानने तथा उसे सतही लेखन से अलग करने की है। उन्होंने हिंदी भाषा में प्रकाशन से संबंधित भारतीय तथा विदेशी

प्रकाशकों तथा प्रकाशकों के बारे में जानकारी दी। उन्होंने कहा कि अंग्रेजी तथा अन्य भारतीय भाषाओं में लिखे साहित्य को हिंदी में अनुवाद करके उसके क्षेत्र का विस्तार करना चाहिए। वेबिनार के प्रथम दिन सह अध्यक्षता कर रहे शासकीय तुलसी महाविद्यालय, अनूपपुर के प्राचार्य प्रोफेसर विक्रम सिंह बघेल तथा देवनागरी महाविद्यालय, गुलावठी बुलंदशहर के प्राचार्य प्रोफेसर योगेश कुमार त्यागी ने वक्ताओं का स्वागत किया।

प्रथम दिन अवधारणात्मक टिप्पणी पीयूष त्रिपाठी ने दी , प्रथम सत्र का संचालन भवनीत सिंह बत्रा तथा दूसरे सत्र का संचालन डॉ पम्पोहन लाल विश्वकर्मा ने किया तीसरे सत्र का संचालन डॉ पुष्पेंद्र कुमार मिश्र ने तथा चौथे सत्र का संचालन संदीप कुमार सिंह ने किया। प्रथम दिवस का आभार ज्ञापन डॉ अमित भूषण द्विवेदी ने किया। वेबीनार का आभार ज्ञापन शासकीय महाविद्यालय वेंकट नगर के प्राचार्य प्रोफेसर आरके सोनी ने किया।

इस अवसर पर 100 से अधिक विद्यार्थी शोधकर्ता शिक्षाविद तथा समाज वैज्ञानिक उपस्थित रहे।









विश्व पर्यावरण दिवस पर शास. तुलसी कॉलेज में पौधारोपण व पर्यावरण के संबंध में वेबिनार सम्पन्न --

_05 जून 2022

शासकीय तुलसी महाविद्यालय, अनुपपुर में विश्व पर्यावरण दिवस के अवसर पर वृक्षारोपण का आयोजन किया गया। इस अवसर पर महाविद्यालय के आंतरिक गुणवत्ता आश्वासन प्रकोष्ठ के द्वारा मानव और पर्यावरण अन्तर्सम्बन्ध विषय पर वेबिनार का भी आयोजन किया गया। मानव-पर्यावरण अन्तर्सम्बन्ध विषय पर मुख्य व्यक्तव्य देते हुए अपने संदेश में महाविद्यालय के प्राचार्य प्रोफेसर विक्रम सिंह बघेल ने कहा की विश्व पर्यावरण दिवस को मनाने का उद्देश्य पर्यावरण संरक्षण के प्रति जागरूकता लाना तथा पर्यावरण को बचाने वाली तकनीकों का जीवन में अधिक से अधिक प्रयोग करना है। प्रोफेसर विक्रम सिंह बघेल ने बताया कि तुलसी महाविद्यालय के कैम्पस को हरित कैंपस में बदलने के लिए व्यापक स्तर पर वृक्षारोपण किया जाएगा। वेबिनार के संयोजक तथा राजनीति विज्ञान विभाग के विभागाध्यक्ष डॉ. जे.के.संत ने कहा कि हम प्लास्टिक के प्रयोग को कम करके पर्यावरण को बचाने में उल्लेखनीय योगदान दे सकते हैं। आइक्यूएसी के संयोजक डॉ. अमित भूषण द्विवेदी ने कहा किपर्यावरण विनाश से वैश्विक तापमान में वृद्धि हो रही है तथा ग्लेशियर पिघल रहे हैं। वनस्पित विज्ञान विभाग के विभागाध्यक्ष डॉ. पी.एस. मलैया ने कहा कि वृक्षारोपण के माध्यम से पर्यावरणीय असंतुलन को सुधारा जा सकता है। वाणिज्य विभाग के विभागाध्यक्ष डॉ. देवेंद्र सिंह बागरी ने कहा कि जल-जंगल-जमीन का संतुलित उपयोग करके तथा पर्यावरण अनुकूल तकनीकी अपनाकर हम अपने ग्रह को बचा सकते हैं।

जंतु विज्ञान विभाग के सहायक प्रोफेसर संगीता बासरानी ने कहा कि पृथ्वी हमारी आवश्यकताओं को पूरा करने में सक्षम है किंतु हम में से किसी एक भी लालच को पूरा करने में असमर्थ है। वाणिज्य विज्ञान के सहायक प्रोफेसर शहबाज़ खान ने कहा कि औद्योगिकीकरण वर्तमान पर्यावरणीय संकट के लिए उत्तरदायी कारण है।

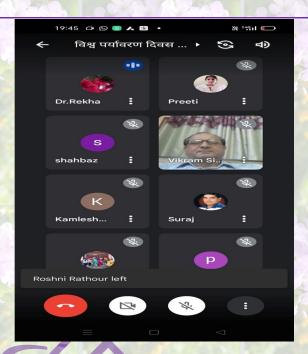
इस अवसर पर डॉ. गीतेश्वरी पांडेय, प्रो.कमलेश चावले,प्रो.पूनम धांडे, प्रो. विनोद कुमार कोल, संजीव द्विवेदी,आगर मालवा महाविद्यालय की प्रो. रेखा गुप्ता सहित विद्यार्थियों की भारी संख्या में विशेष उपस्थित रहीं। कार्यक्रम का संचालन अर्थशास्त्र विभाग की सहायक प्रोफेसर प्रीति वैश्य ने किया।





- डॉ प्रभाकर साल्वे, सह प्राध्यापक डॉ ची यस. मलेया, सहा.प्राध्यापक डॉ डी एस.बागरी, सहा.प्राध्यापक डॉ. गीतेश्वरी पाण्डेय, सहा.प्राध्यापक प्रो. अजयराज सिंह, सहा.प्राध्यापक डॉ. अमित भूषण व्हिवेदी, सहा.प्राध्यापक
- प्रो प्रीति वैश्य, सहा,प्राध्यापक प्रो कमलेश चावले,सहा,प्राध्यापक प्रो संगीता बारसानी, सहा,प्राध्यापक प्रो विनोत दुनार कोल, सहा,प्राध्यापक प्रो पूनम धांडे, सहा,प्राध्यापक प्रो चुनम धांडे, सहा,प्राध्यापक प्रो जान प्रकाल पाण्डेय, सहा,प्राध्यापक प्रो शाहबाज़ खान, सहा,प्राध्यापक

Platform- GoogleMeet https://meet.google.com/nda-qrya-ujb आयोजक: आंतरिक गुणवत्ता प्रकोष्ठ शासकीय तुलसी महाविद्यालय अनूपपुर (मध्य प्रदेश)-484224







शासकीय तुलसी महाविद्यालय के त्रैमासिक न्यूज़लेटर 'तिपान बुलेटन' का हुआ विमोचन-

_10 जून 2022

- आज दिनाँक 10.06.2022 को महाविद्यालय के प्राचार्य डॉ. विक्रम सिंह बघेल द्वारा महाविद्यालय की त्रैमासिक डिजिटल न्यूज़लेटर तिपान बुलेटिन के प्रवेशांक का विमोचन किया गया।
- विमोचन के इस अवसर पर प्राचार्य डॉ. बघेल ने न्यूज़लेटर के संपादक मंडल को शुभकामनाएं देते हुए कहा कि सीमित संसाधनों के साथ महाविद्यालय के स्टॉफ का प्रयास अत्यंत सराहनीय है और नैक मूल्यांकन में सफल होने हेतु इसी प्रकार के प्रयासों में निरंतरता बनाए रखने की आवश्यकता है।
- तिपान बुलेटिन में प्रमुखता से कार्यालयीन एवम विभागीय समाचारों, प्रमुख आयोजनों, खेल एवं सांस्कृतिक गति<mark>विधियों</mark> के साथ-साथ लघु कथा, कविता आलेख एवं नवाचारों सम्बन्धी समाचारों का प्रका<mark>शन किया</mark> जाएगा।
- तिपान बुलेटिन का प्रकाशन म<mark>हाविद्या</mark>लय के आंतरिक गुणवत्ता आश्वासन प्रकोष्ठ द्वारा किय<mark>ा जा रहा</mark> है।
- तिपान बुलेटिन के प्र<mark>वेशांक का सम्पाद</mark>न प्रो.प्रीति वैश्य ने किया है।
- तिपान बुलेटिन के सम्पादक मण्डल में प्रो.विनोद कुमार कोल, प्रो. संगीता बासरानी, प्रो.प्रीति वैश्य तथा प्रो.पूनम धांडे के नाम शामिल है।
- प्रवेशांक के डिजिटल रूप एवं साज-सज्जा को प्रो. शहबाज़ खान, प्रो.ज्ञान शंकर पांडेय ने अंतिम रूप दिया है।
- इसके पूर्व आई.क्यू.ए.सी. के 'तिपान बुलेटिन' नाम से त्रैमासिक न्यूज़लेटर प्रकाशन आरम्भ करने के प्रस्ताव पर प्राचार्य प्रो.विक्रम सिंह बघेल ने मंजूरी प्रदान की थी।
- न्यूजलेटर विमोचन के अवसर पर बुलेटिन के सम्पादक मंडल के साथ डॉ. देवेंद्र सिंह बागरी,डॉ. गीतेश्वरी पांडेय, प्रो.कमलेश चावले, डॉ. अमित भूषण द्विवेदी,प्रो.शहबाज खान,प्रो.ज्ञान प्रकाश पांडेय,प्रो. अजयराज सिंह राठौर एवं संगीता राठौर उपस्थित रहें।
- प्रवेशांक को कॉलेज की वेबसाइट www.gtcanuppur.ac.in पर देखा जा सकता है।



शासकीय तुलसी महाविद्यालय अनूपपुर में ऊर्जा साक्षरता अभियान का हुआ आयोजन

_17 जून 2022

शासकीय तुलसी महाविद्यालय अनूपपुर में मध्यप्रदेश जन अभियान परिषद अनूपपुर के तत्वाधान अनूपपुर कलेक्टर सोनिया मीणा के निर्देशन और प्राचार्य डॉ. विक्रम सिंह बघेल के मार्गदर्शन एवं ऊर्जा साक्षरता अभियान के नोडल अधिकारी उमेश पाण्डेय जिला समन्वयक जन अभियान परिषद के कुशल मार्गदर्शन में शासकीय तुलसी महाविद्यालय में ऊर्जा साक्षरता अभियान का प्रशिक्षण प्रदान किया गया। इस कार्यक्रम के दौरान मध्य प्रदेश ऊर्जा विकास निगम लिमिटेड शहडोल से श्री रितेश शुक्ला , प्रतिभा ग्रामीण विकास संस्था अनूपपुर से ,श्री मोहनलाल पटेल उपस्थित हुए और उपस्थित छात्र/ छात्राओं को बताया कि सभी लोग ऊर्जा साक्षरता ऐप अवश्य डाउनलोड करें एवं इसके माध्यम से प्रेजेंटेशन में दिए गए निर्देशों का पालन करते हुए ऊर्जा साक्षर बने। उन्होंने बताया कि ऊर्जा बचाने में अपना योगदान दें इसके पश्चात ऊर्जा विकास निगम लिमिटेड शहडोल श्री रितेश शुक्ला द्वारा छात्र/ छात्राओं को बड़े ही विस्तार से ऊर्जा के महत्व और इसके सही तरीके से उपयोग के बारे में जानकारी प्रदान की , और ऊर्जा के महत्व पर प्रकाश डाला। महाविद्यालय के प्रो. विनोद कुमार कोल , प्रो.प्रीति वैश्य , और डॉ. तरन्तुम सरवत, डॉ शैली अग्रवाल के द्वारा उपस्थित छात्र-छात्राओं को मोबाइल पर वेबसाइट कार्या/ अस्थान कार्या राजस्थित छात्र-छात्राओं को सोबाइल पर वेबसाइट कार्या/ क्रिडा अधिकारी रामायण वर्मा ने इस ऊर्जा संरक्षण कार्यक्रम में उपस्थित सभी छात्र/छात्राओं को ऊर्जा बचाने हेतू शपथ भी दिलाई।





अनूपपुर, शासकीय तुलसी महाविद्यालय में हुआ अंतरराष्ट्रीय योग दिवस का आयोजन

_21 जून 2022

जिले के अग्रणी शासकीय तुलसी महाविद्यालय में प्राचार्य डॉ. विक्रम सिंह बघेल के मार्गदर्शन में राष्ट्रीय सेवा योजना एवं एन सी सी के संयुक्त तत्त्वाधान में योग दिवस के अवसर पर योगाभ्यास कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इस वर्ष कार्यक्रम का थीम " मानवता के लिए योग" था। इस कार्यक्रम में रासेयो इकाई के वॉलिंटियर्स, NCC कैडेट्स समेत महाविद्यालय के छात्र/ छात्राओं एवं शासकीय उत्कृष्ट विद्यालय, अनूपपुर के एन सी सी कैडेट्स ने प्रतिभागिता की। कार्यक्रम में महाविद्यालय के विरष्ठ प्राध्यापक डॉ जे के सन्त, डॉ. पी एस मलैया, एन सी सी अधिकारी प्रो. अजयराज सिंह राठौर (ए.एन.ओ), प्रो', ज्ञान प्रकाश पाण्डेय और प्रो. संगीता बासरानी (कार्यक्रम अधिकारी रासेयो) उत्कृष्ट विद्यालय के ANO उदय प्रताप सिंह 7MP(I) COY NCC यूनिट के PI स्टाक हवलदार विनोद सिंह और महाविद्यालय के समस्त शैक्षणिक एवं अशैक्षणिक स्टॉफ उपस्थित रहा। जिसमें से प्रमुख रूप से प्रो. शाहबाज खान प्रो. पूनम धांडे, प्रो. कमलेश चावले डॉ. गीतेश्वरी पाण्डेय प्रो. विनोद कुमार कोल, डॉ. दुर्गेश द्विवेदी, डॉ. बृजेन्द्र सिंह, प्रो. सत्येन्द्र सिंह चौहान, प्रो. गंगेश कुमार, प्रो. अनुपम गौतम, प्रो. मनीष पांडेय, श्री संतोष सोलंकी, श्री संतोष सिंह, श्री रामकृष्ण कवर, शेर सिंह, विकास आदि उपस्थित रहे। इस योगाभ्यास कार्यक्रम में बतौर ट्रेनर प्रो. सूरज पारवानी, रामायण वर्मा, और इन्द्रनारायण काळी (स्पोर्ट्स ऑफिसर) ने कार्य किया एवं सभी को इस कार्यक्रम से लाभान्वित किया।







मनुष्य के मानसिक , शारीरिक एवं आध्यात्मिक ऊर्जा को बढ़ता है योग

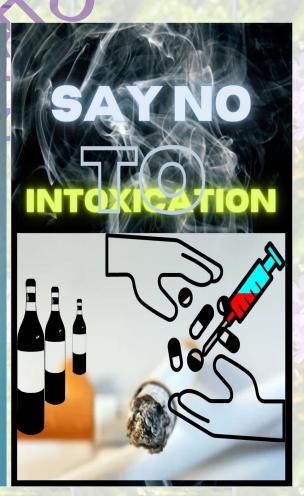
अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस की शुभकामनाएं!

राष्ट्रीय सेवा योजना इकाई द्वारा नशा प्रवृत्ति उन्मूलन हेतु जागरूकता कार्यक्रम का आयोजन-

_26 जून 2022

अंतर्राष्ट्रीय नशा निवारण दिवस 26 जून के अवसर पर जिले के अग्रणी शासकीय तुलसी महाविद्यालय में गोष्ठी का आयोजन प्राचार्य डॉ. विक्रम सिंह बघेल के मार्गदर्शन में राष्ट्रीय सेवा योजना इकाई द्वारा किया गया। इस अवसर पर मुख्य वक्ता के रूप में उपस्थित महाविद्यालय में राजनीति विज्ञान के प्राध्यापक एवं विभागाध्यक्ष डॉ.जे. के. सन्त ने कहा कि नशा सभी समस्याओं की जड़ है। वर्तमान में हो रहे सामाजिक विघटन का यह प्रमुख कारण है। नशे की लत युवाओं को कमजोर बना रही है जिससे समाज में आत्महत्या की दर भी बढ़ रही है। उन्होंने कहा कि यदि समाज का संतुलित विकास करना है तो इस तरह की प्रवृत्ति का उन्मूलन करना होगा। इसी कार्यक्रम में बतौर विशिष्ट वक्ता उपस्थित प्रो. शाहबाज़ खान ने कहा कि वर्तमान दौर में युवावर्ग नशे को एक फैशन के रूप में ले रहा है और इसे आधुनिकता का एक प्रतीक मान लिया है। यह एक गम्भीर सामाजिक समस्या है इससे उबरने के लिए व्यापक सामुदायिक प्रयासों की आवश्यकता है। कार्यक्रम का आयोजन रासेयो कार्यक्रम अधिकारी ज्ञान प्रकाश पाण्डेय एवं प्रो. संगीता बासरानी के निर्देशन में किया गया।

नशा है सभी समस्याओं की जड़.... विकास की चाह हो, तो करें.... नशा उन्मूलन का निश्चय दृढ़



कागज विहीन कार्ययालय के दिशा में IQAC की एक पहल :- Googel Work space

शासकीय तुलसी महाविद्यालय के डोमेन से शैक्षणिक सत्र 2022-23 से गूगल वर्कस्पेस सुविधा का शुभारंभ महाविद्यालय के IQAC के द्वारा शुरू किया गया है। गूगल वर्क स्पेस के शुरू होने से महाविद्यालय के प्रशासनिक दक्षता एवं गुणवत्ता में वृद्धि होगी।

वर्क स्पेस क्या है?

गूगल वर्कस्पेस से आशय गूगल द्वारा दी जाने वाले उन सेवाओं से है जिन्हे पूर्व में गूगल अलग-अलग स्थानों से हमें प्रदान करता था। पूर्व में गूगल द्वारा दी जाने वाली सेवाएं अलग-अलग स्थान पर उपलब्ध होती थीं इसलिए जो लोग बड़े संस्थाओं में कार्य करते थे उन्हें बार-बार अलग-अलग गूगल सेवाओं के लिए अलग-अलग वेबसाइट विजिट करना पड़ता था और डेटा प्रबन्धन में भी मुश्किलें आती थी। इन मुश्किलों को देखते हुए गूगल ने जीमेल खाते से संबंधित गूगल एप्प्स सुविधा शुरू किया। गूगल एप्प्स में जीमेल, ड्राइव, कैलेंडर, डॉक्स, शीट्स, क्लासरूम, स्लाइड, साइट, व्हाइट जैमबोर्ड जैसी अन्य उपयोगी सेवाओं को उपभोक्ताओं के जीमेल खाते के साथ फ्री में उपलब्ध करा दिया। फिर भी गूगल एप्प्स के साथ एक मुख्य समस्या थी उसका व्यक्तिगत गूगल खाते से सम्बंधित होना जबिक बड़े संस्थानों में व्यावसायिक स्तर पर एक साथ बहुत से लोग काम करते है तथा वे अलग-अलग किस्म से आंकड़ों का प्रबंधन करते है। इसी समस्या को ध्यान में रखते हुए गूगल ने गूगल वर्कस्पेस की सुविधा को शुरू किया जिसे हम G-Suite के नाम से भी जानते है। वस्तुतः, G-Suite हमें गूगल एप्स के अलावा बहुत से ऐड-ऑन सेवाओं की भुगतान आधारित व्यवस्था करता है जबिक गूगल एप्स की सुविधा निःशुल्क है।

ग्गल वर्क स्पेस के लिए पंजीकरण कैसे करें-

गूगल वर्क स्पेस के लिए संस्थान(व्यावसायिक संस्थान भी) को सर्वप्रथम अपने संस्थान के डोमेन नाम से पंजीकरण करना होता है। पंजीकरण के बाद से गूगल वर्कस्पेस आईडी संस्थान के डोमेन के साथ प्राप्त हो जाती है। आरंभ में वर्कस्पेस के द्वारा वर्कस्पेस डोमेन आईडी का ट्रायल वर्जन प्रदान किया जाता है।इसके बाद डोमेन सत्यापन के लिए गूगल संस्थान से कुछ दस्तावेजों की मांग करता है उसके बाद जैसे ही गूगल के द्वारा डोमेन का सत्यापन हो जाता है हम अपने संस्थान के लिए असीमित डोमेन आधारित गूगल खाते का निर्माण कर सकते है। यद्यपि कि, G-Suite की अधिकांश सेवाएं भुगतान आधारित है फिर भी गूगल ने 'Google Work Space for Education' सुविधा को शैक्षणिक संस्थानों के लिए मुफ्त रखा है।

गूगल वर्क स्पेस के फ़ायदे- गूगल वर्क स्पेस के अनेकों फायदे संभावित है-

विशेषकर शैक्षणिक संस्थानों में जहां कागज उपयोग रहित कार्यालय की बातें की जाती है, वर्क स्पेस के माध्यम से कॉलेज प्रशासन के सभी प्रमुख समितियों को कॉलेज डोमेन आधारित आईडी प्रदान किया जा सकता है जहां पर विभिन्न समितियों अपने कार्य को क्लाउड आधारित असीमित स्टोरेज कर सकते है और उनके कार्य तथा डेटा कॉलेज के डोमेन पर सदैव उपलब्ध रहेगा।

आजकल विश्वभर के शैक्षणिक संस्थानों में मिश्रित अध्ययन पद्धित को स्वीकार किया जा रहा है, गूगल वर्कस्पेस फ़ॉर एजुकेशन के सेवा के अंतर्गत हम अपने विद्यार्थियों को गूगल कॉन्टैक्ट्स से जोड़कर उन्हें गूगल क्लासरूम,व्हाइट जैमबोर्ड, गूगल मीट, गूगल फार्म/क्विज आदि से शिक्षा प्रदान कर सकते है,असाइनमेंट जमा करवा सकते है और उसका स्वतः मूल्यांकन कर सकते है।

वर्क स्पेस आईडी से महाविद्यालय में अध्ययनरत समस्त विद्यार्थियों को आईडी-पासवर्ड दिया जा सकता है जिसका प्रयोग विद्यार्थी एन-लिस्ट सुविधा के लिए भी कर सकते है।

वर्कस्पेस एडिमन कंसोल-

गूगल वर्कस्पेस आईडी के द्वारा संस्था अपने एकाउंट्स और डेटा का प्रबंधन सुरक्षित त<mark>रीके से</mark> कर पाए इसके लिए गूगल वर्कस्पेस एडिमन कंसोल की सुविधा संस्था को देता है।संस्था स्वयं से यूजर बना भी सकते है तथा डिलीट भी कर सकते है।

इस प्रकार हम देख सकते है कि गूगल वर्कस्पेस प्रशासनिक व्यवस्था को दुरुस्त करने में, कार्यालय के दस्तावेजों को दीर्घकाल तक प्रबन्धन करने में,कागजरहित कार्यालय अभियान में,मिश्रित अध्ययन पद्धित को अपनाने में तथा छात्र अधिगम का मूल्यांकन करने में वर्कस्पेस का योगदान अत्यधिक महत्वपूर्ण है।

शिक्षा एवं शोध सुविधा के विकास में महत्वपूर्ण सिद्ध होगा N-LIST-

शैक्षणिक सत्र 2022-23 के लिए महाविद्यालय में शिक्षा मंत्रालय के स्वायत संस्था सूचना और पुस्तकालय नेटवर्क (इनिएलबनेट) केंद्र, गांधीनगर की एन-लिस्ट परियोजना का महाविद्यालय सिंक्क्रिप्शन किया गया है। एन-लिस्ट की सुविधा के शुरू हो जाने से महाविद्यालय की अनुसंधान अवसंरचना को विकसित करने में मदद प्राप्त होगी। एनलिस्ट परियोजना के कॉलेज एडिमन डॉ. अमित भूषण द्विवेदी तथा तकनीकी सहयोग श्री शाहबाज़ खान से प्राप्त किया जा सकता है।

क्या है N-LIST -

आधुनिक समय में इलेक्ट्रॉनिक सूचना संसाधनों को सूचना तकनीकी के क्षेत्र में सबसे आधुनिक एवं सबसे शिक्तशाली माध्यम के रूप में स्वीकार किया जाता है। वर्तमान समय में अकादिमक पुस्तकालय अपने पास मुद्रित संग्रह के स्थान पर संसाधनों के अनुकूलतम उपयोग हेतु EIRs(Electronic Information Resources) का प्रयोग कर रहे हैं। इलेक्ट्रॉनिक संसाधनों के बढ़ते हुए उपयोग तथा पुस्तकालयों के लिए कम होती जा रहीं बजट आवंटन जैसी समस्याओं का निराकरण करने के लिए विश्वविद्यालयों तथा महाविद्यालयों के द्वारा अनेकों उपाय किये जा रहे है, उन्हीं उपायों में से एक उपाय है N-LIST(National Library and Information Services Infrastructure for Scholarly Content) परियोजना।

"नेशनल लाइब्रेरी एंड इंफॉर्मेशन सर्विसेज इंफ्रास्ट्रक्चर फॉर स्कॉलरली कंटेंट (एन-लिस्ट)" शीर्षक वाली परियोजना, यूजीसी-इन्फोनेट डिजिटल लाइब्रेरी कंसोर्टियम के तहत कॉलेज के घटक के रूप में यूजीसी की एक नियमित योजना है। वर्तमान समय में एन-लिस्ट परियोजना को ई-शोध सिंधु: उच्च शिक्षा के लिए कंसोर्टिया में विलय

कर दिया गया है। एन-लिस्ट के तहत 6,000+ जर्नल, 1,64,300+ ई-बुक्स और एनडीएल के माध्यम से सभी सरकारी, सरकारी सहायता प्राप्त और गैर-सहायता प्राप्त कॉलेजों को प्रॉक्सी सर्वर/शिबोलेथ के माध्यम से 6,00,000 ई-बुक्स तक पहुंच प्रदान करता है।

एन-लिस्ट परियोजना के तहत उपलब्ध जरनल्स एवं ई-बुक्स की सूची-

E-Journals (Fulltext)	E-Books		
American Institute of Physics [18 titles]	Cambridge Books Online [1800 titles]		
Annual Reviews [33 titles]	E-brary [185000+ titles]		
Economic and Political Weekly (EPW) [1 title]	EBSCoHost-Net Library [936 titles]		
Indian Journals [180+ titles]	Hindustan Book Agency [65+ titles]		
Institute of Physics [46 titles]	Institute of South East Asian Studies(ISEAS) Books [382+titles]		
JSTOR [2500+ titles]	Oxford Scholarship [1402+ titles]		
Oxford University Press [262 titles]	Springer eBooks [2300 titles]		
Royal Society of Chemistry [29 titles]	Sage Publication eBooks [1000 titles]		
H. W. Wilson [3000+ titles]	Taylor Francis eBooks [1800 titles]		
Cambridge University Press [224 titles] (2010-	Myilibrary-McGraw Hill [1124 titles]		
2016)			
The said of the said	South Asia Archive [through NDL]		
725	World e-Books Library [Now Available through NDL only]		

विविध -

1 ॰ एक चिंतन

"शिक्षा या एजुकेशन "

कमलेश कुमार चावले सहायक प्रध्यापक (राजनीति शास्त्र) शासकीय तुलसी महाविद्यालय अनूपपुर

मध्यप्रदेश में शैक्षणिक सत्र 2021-22 से राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के लागू होने के साथ ही पूरे प्रदेश देश में शिक्षा पर विचार –विमर्श प्रारंभ हो गया है | प्रदेश एवं देश ही नहीं, बल्कि पुरे विश्व में शिक्षा की एक लहर सी चल रही है | किन्तु वर्तमान समय में शिक्षा की व्याख्या जिस तरह से की जा रही है, उसे देखकर ऐसा लगता है जैसे "शिक्षा" शब्द का अर्थ जानने की जरुरत किसी को महसूस नहीं हो रही है, क्योंकि अगर इसे जान लेते तो हम समझ जाते कि आज कही भी शिक्षा दी ही नहीं जा रही है | आज जैसे धर्म का स्थान "रिलिजन" ने ले लिया है वैसे ही शिक्षा का स्थान भी "एजुकेशन" ने ले लिया है | जिसका एकमात्र लक्ष्य नौकरी प्राप्त करना है | अपना पेट भरने के लिए अपना जीवन किसी और के पास गिरवी रखकर पूरा जीवन दूसरे के अधीन व्यतीत करना हो गया है | यह बहुत ही आश्चर्य की बात है कि इस स्रष्टि का श्रेष्ठ प्राणी केवल अपना पेट भरने के लिए शिक्षित होना चाहता है | माँ- बाप की जीवन भर की कमाई खर्चकर , अपने जीवन के अमूल्य 20-25 वर्ष लगाकर अंत में पूरा जीवन किसी और का नौकर बनकर जीना चाहता है | स्वयं अपनी स्वतंत्रता खोकर पराधीन होना चाहता है | जबकि वास्तविक शिक्षा स्वतंत्र रहकर जीना और स्वतंत्रता के लिए संघर्ष करना सिखाती है ।

शिक्षा और एजुकेशन में एक प्रमुख अंतर है कि हमारा देश पुरुषार्थ प्रधान जीवन शैली का समर्थक है | जिसमे धर्म, अर्थ, काम, और मोक्ष हमारे बुद्धि, शरीर, मन, और आत्मा के आध्यात्मिक रूप है | शिक्षा में ये चारो समाहित रहते है | जबिक एजुकेशन में केवल अर्थ (भौतिक पदार्थ) की ही प्रधानता है, जिसका मुख्य लक्ष्य शारीरिक सुख मात्र है | इसी से हमारा मन(काम) भी सम्बन्ध रखता है | एजुकेशन में जीवन का अर्धांग (धर्म एवं मोक्ष) पूरा ही बाहर निकाल दिया गया है | इससे व्यक्तित्व का पूर्ण निर्माण संभव ही नहीं है | यह अपूर्णता ही एजुकेशन की मुख्य कमी है | आज व्यक्ति जितना उच्च शिक्षा ग्रहण करता जाता है , उतनी ही उसके व्यक्तित्व की अपूर्णता गहन होती जाती है | और उसमे संवेदना, दया, और करुणा के भाव कम होते जाते है |

एजुकेशन का एक अन्य दुष्प्रभाव संयुक्त परिवारों के विघटन का है | क्योंकि नौकरी करने के लिए घर छोड़ना ही पड़ता है | संयुक्त परिवारों के विघटन का परिणाम संस्कारों की विलुप्ति के रूप में सामने आ रहा है | बच्चों को क्या और कैसे पढ़ाया जाये ,इसकी जानकारी न तो आधुनिक माता —िपता को है और न ही उनके पास बच्चों के लिए समय है | दादा-दादी के पास ज्ञान और समय दोनों है ,लेकिन आधुनिक माता —िपता को उनपर विश्वास नहीं होता है | इन सब का परिणाम संस्कार विहीन समाज के रूप में सामने आ रहा है |

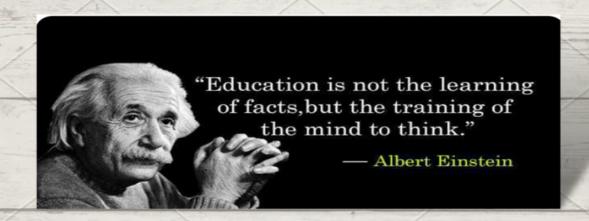
आज शिक्षा व्यवसाय और शिक्षक व्यवसायी बन गया है | और इस स्थित में जब शिक्षक स्वयं व्यापारी , भ्रष्ट होकर शिष्यों का शोषण करने लगे तो शिक्षा की स्थित और क्या हो सकती है | इसी से शिक्षा में राजनीति का प्रवेश हो जाता है | राजनीति के प्रवेश के साथ ही सत्ता बल, धन-बल, आक्रामकता, हिंसा, कट्टरवाद आदि भी शैक्षणिक संस्थानों के अंग बनते जा रहे है |

अभी हमारी शिक्षा व्यवस्था का आधार सूचना है ,इसमे जिसके पास सर्वाधिक सूचनाये है वह ज्यादा शिक्षित है | लेकिन वह अपने स्वयं के बारे में सबसे कम जानता है | थ्री इडियट, तारे जमीन पर जैसी फिल्मे इन्ही विचारो की अभिव्यक्ति है | वर्तमान शिक्षा प्रणाली तयशुदा सिद्धांत देती है, लेकिन विचार उत्पन्न करने की क्षमता विकसित नहीं करती है | अभी हमारी शिक्षा व्यवस्था "उत्तर" निर्भर है , प्रश्न निर्भर नहीं | यह शिक्षा प्रणाली बोध स्मृति पर आधारित है | और यह शिक्षा प्रणाली हमें पंडित तो बना सकती है किन्तु ज्ञानी नहीं |

आज की शिक्षा विनयशीलता के स्थान पर अहंकार पैदा करती है | समाज में जिसे भी शिक्षित होने का अवसर मिला है, वे सभी अग्रेजीजदा हो गए | हमारा आज का समाज अनपढ़ों से कम और पढ़े- लिखे लोगो से ज्यादा त्रस्त है | सभी लोकसेवक सामान्य जनता के लिए पाषाण-हृदय हो गए है जिनका परिणाम भ्रष्टाचार के रूप में सामने आ रहा है | और भ्रष्टाचार की इस नाजायज संतान को पालने-पोषने में समाज का शिक्षित वर्ग ही अधिक जिम्मेदार है |

हमारी प्राचीन शिक्षा का सपना 'वसुधैव कुटुम्बकम' रहा है | लेकिन एजुकेशन में व्यक्ति अकेला स्वयं के लिए जीना सीख रहा है | जैसा कि लोक प्रशासन के विद्वान् डा. माहेश्वरी ने कहा है – ''मैंने पढाई के समय नैतिक शिक्षा पढ़ी, हमारे बेटे ने शारीरिक शिक्षा और हमारे पोते ने व्यावसायिक शिक्षा'' | आज हमें फिर से नैतिक शिक्षा की ओर लौटना होगा | क्योंकि दो पीढ़ी के बाद देश में कोई समाज बचेगा या नहीं, कहा नहीं जा सकता | पश्चिम का उदाहरण हमारे सामने है | विज्ञानं और धर्म दोनों ही आज अपूर्ण है | धर्म को शास्त्रों से बाहर लाना पड़ेगा और शिक्षा (विज्ञान) को भी जीवन के सभी पक्षों से जोड़ना होगा | राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 इन्हीं विचारों को धरातल पर लाने का प्रयास है |

शिक्षा व्यवस्था को सफल नहीं बल्कि सफल मनुष्य की अवधारणा का विकास करना चाहिये | किसी व्यक्ति के बुरे कामो में सफल होने से अच्छा है कि वह अच्छे काम में असफल हो जाये | वैसे देर तो हो चुकी है, किन्तु अब भी शिक्षा व्यवस्था पर चिंतन कर आज की प्राथमिकता के अनुरूप आमूल-चूलपरिवर्तन करना अनिवार्य है | इसके लिये अब एकमात्र आस युवा पीढ़ी से बची है | वही शिक्षा की उपभोक्ता भी है और वही बड़ा परिवर्तन लाने में सक्षम भी है | उसको देश, समाज और स्वयं के सर्वांगीण विकास की आवश्यकताओं का पुनः आकलन करके क्रन्तिकारी कदम उठाने होंगे | युवाओं को लोकतंत्र के तीनो पायो (कार्यपालिका, विधायिका,न्यायपालिका) को यह दृढ़ता से समझा देने की आवश्यकता है कि शिक्षा पहले व्यक्ति का चारित्रिक विकास करे, तािक वह केवल पेट भरकर बिना कुछ किये अपना जीवन न व्यतीत करे |



2. आलेख -

विश्व पर्यावरण दिवस 5 जून : पर्यावरण संरक्षण

डॉ. ब्रजेन्द्र सिंह (अ.वि.) रसायनशास्त्र शास. तुलसी महाविद्यालय अनुपपुर (म.प्र.) Email:- singh.brijendra96@gmail.com

पर्यावरण की सुरक्षा और संरक्षण के लिये पूरे विश्व में प्रतिवर्ष पांच जून को विश्व पर्यावरण दिवस मनाया जाता है। इस दिवस को मनाने का संकल्प संयुक्त राष्ट्र ने पर्यावरण के प्रति वैश्विक स्तर पर राजनीतिक और सामाजिक जागृति लाने के लिये वर्ष 1972 में लिया था। उस वर्ष संयुक्त राष्ट्र महासभा द्वारा 5 से 16 जून तक आयोजित विश्व पर्यावरण सम्मेलन में चर्चा के बाद प्रतिवर्ष 5 जून को 'विश्व पर्यावरण दिवस मनाने का संकल्प लिया गया। पहला विश्व पर्यावरण दिवस, विश्व में 5 जून, 1973 को मनाया गया था। वैश्विक सहभागिता के लिये आरम्भ में मुख्य आयोजन संयुक्त राष्ट्र मुख्यालय न्यूयार्क में ही होता था, मगर वर्ष 1987 में केंद्र को बदलते रहने का सुझाव सामने आया और उसके बाद से ही इसके आयोजन के लिये अलग अलग देशों को चुना जाता है। इस आयोजन में हर साल 150 से अधिक देश हिस्सा लेते हैं और इसमें कई सरकारी, सामाजिक और व्यावसायिक संगठन, पर्यावरणविद् और विषय विशेषज्ञ पर्यावरण की सुरक्षा, समस्या आदि विषय पर बात करते हैं। पर्यावरण संरक्षण की दृष्टि से यह एक महत्वपूर्ण दिन हैं। इस दिन पूरा विश्व पर्यावरण संरक्षण के मार्ग में आने वाली चुनौतियों के समाधान की राह भी खोजता है।

पर्यावरण के संरक्षण से पूर्व यह जानना जरूरी है कि पर्यावरण के घटक अथवा सार तत्व क्या हैं? क्योंकि इसी से पर्यावरण का संरक्षण सुगम होगा। पर्यावरण के जैविक संघटकों में सूक्ष्म जीवाणु से लेकर कीड़े मकोडे, सभी जीव-जंतु और पेंड़-पौधों के अलावा उनसे जुड़ी सारी जैव क्रियाएं और प्रक्रियाएं शामिल होती हैं। जबिक पर्यावरण के अजैविक संघटकों में निर्जीव तत्व और उनसे जुड़ी प्रक्रियाएं आती हैं, जैसे: पर्वत, चट्टानें, नदी, हवा और जलवायु के तत्व इत्यादि। सामान्य अर्थों में यह हमारे जीवन को प्रभावित करने वाली सभी जैविक और अजैविक तत्वों, तथ्यों, प्रक्रियाओं और घटनाओं से मिलकर बनी इकाई है। यह हमारे चारों ओर व्याप्त है और हमारे जीवन की प्रत्येक घटना इसी पर निर्भर करती और सम्पादित होती हैं। मनुष्यों द्वारा की जाने वाली समस्त क्रियाएं पर्यावरण को प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष रूप से प्रभावित करती हैं।

मानव हस्तक्षेप के आधार पर पर्यावरण को दो भागों में बांटा जा सकता है, जिसमें पहला है प्राकृतिक या नैसर्गिक पर्यावरण और दूसरा मानव निर्मित पर्यावरण। यह विभाजन प्राकृतिक प्रकियाओं और दशाओं में मानव हस्तक्षेप की मात्रा की अधिकता और न्यूनता के अनुसार तय होता है। पर्यावरणीय समस्याएं जैसे प्रदूषण, जलवायु परिवर्तन इत्यादि मनुष्य को अपनी जीवनशैली के परिवर्तन के बारे में पुनर्विचार के लिये प्रेरित कर रही हैं, जो अब वांछनीय नहीं अनिवार्य है। अब पर्यावरण संरक्षण और पर्यावरण प्रबंधन की आवश्यकता महत्वपूर्ण है।

स्टकहो<mark>म के</mark> पहले सम्मे<mark>लन में बना था संयुक्त राष्ट्र पर्यावरण कार्यक्रम</mark>

पर्यावरण प्रदूषण की समस्या पर वर्ष 1972 में संयुक्त राष्ट्र ने स्टॉकहोम (स्वीडन) में विश्वभर के देशों का पहला पर्यावरण सम्मेलन आयोजित किया था। इसमें एक सौ उत्रीस देशों ने भाग लिया था और पहली बार पर्यावरण संरक्षण के परिप्रेक्ष्य में एक ही पृथ्वी का सिद्धांत मान्य किया गया था। इसी सम्मेलन में संयुक्त राष्ट्र पर्यावरण कार्यक्रम (यूनाइटेंड नेशन्स इनवायरमेंट प्रोग्राम) बनाया गया था और प्रतिवर्ष पांच जून को विश्व पर्यावरण दिवस आयोजित करके नागरिकों को प्रदूषण की समस्या से अवगत कराने का निश्चय किया गया था। इसका मुख्य उद्देश्य पर्यावरण के प्रति जागरूकता लाते हुए राजनीतिक चेतना जागृत करना और आम जनता को प्रेरित करना था। विश्व के भविष्य को

किस प्रकार पर्यावरण संरक्षण और सुधार से ज्यादा सुरक्षित बनाया जा सकता है इस पर विमर्श अब पर्यावरण दिवस का स्था<mark>यी भाव</mark> है।

चार साल पहले जब भारत को विश्व पर्यावरण दिवस की मेजबानी मिली

प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने चार साल पहले अपने लोकप्रिय रेडियो-टीवी कार्यक्रम 'मन की बात' में यह कहा था कि वर्ष 2018 में विश्व पर्यावरण दिवस की मेजबानी भारत को मिलना जलवायु परिवर्तन सम्बन्धी मुद्दों पर भारत की नेतृत्व क्षमता को विश्व समुदाय द्वारा स्वीकार करने का स्पष्ट संदेश है। इस दौरान उन्होंने देशवासियों से प्लास्टिक के प्रयोग को नकारने की भी अपील की थी। विश्व पर्यावरण दिवस के अवसर पर भारत की मेजबानी में पर्यावरण मंत्रालय द्वारा आयोजित पांच दिवसीय समारोह में प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने भारत द्वारा पर्यावरण संरक्षण के क्षेत्र में किये जा रहे कार्यों से विश्व समुदाय को अवगत भी करवाया था। इस मेजबानी का सबसे बड़ा लाभ यह हुआ कि पर्यावरण के मुद्दे पर अब भारत की बात को अधिक गौर से सुना जाता है। और देश में भी पर्यावरण संरक्षण अब सर्वोच्च प्राथमिकता में शुमार किया जाता है। किसी भी वैश्विक मंच पर अब भारत पर्यावरण को लेकर तटस्थ नहीं बल्कि पर्यावरण के पक्षधर होने की गम्भीर भूमिका निभाता है।

विश्व पर्यावरण दिवस पर प्रतिवर्ष एक लक्ष्य, एक विचार, एक थीम का निर्धारण संयुक्त राष्ट्र द्वारा किया जाता है। इसे 'थीम ऑफ दी ईयर' कहा जाता हैं। वर्ष 2021 में विश्व पर्यावरण दिवस की थीम थी - "सब मिलकर फिर से कल्पना करें। फिर से बनाएं फिर से पुनर्स्थापित करें नया विश्व"। इस लक्ष्य का मंतव्य पर्यावरण प्रदूषण से मुक्त विश्व का निर्माण, ऐसे विश्व की कल्पना करना और ऐसे विश्व को पुनर्स्थापित करना है। वर्ष 2021 में विश्व पर्यावरण दिवस का आयोजन पाकिस्तान में हुआ, जिसमें इस लक्ष्य को लेकर गम्भीर विचार- विमर्श हुआ। वस्तुत: विश्व पर्यावरण दिवस पर तय की गई थीम उस लक्ष्य को पारिभाषित करती है, जो पर्यावरण संरक्षण के लिए तय किये जाते हैं। विश्व पर्यावरण दिवस की पिछली थीम की यदि हम बात करें तो वर्ष 2020 की थीम थी- "जैव विविधता का जश्न मनाएं", वर्ष 2019 की थीम थी – "वायु प्रदूषण को हराओ", वर्ष 2018 की थीम थी- " प्लास्टिक प्रदूषण को हराओ ", वर्ष 2017 की थीम थी – " लोगों को प्रकृति से जोड़ना-शहर में " और वर्ष 2016 थीम थी- " जीवन के लिए जंगली हो जाओ अर्थात जंगल के सर्वांग स्वरूप को अपनाओ "।



3. आलेख-

" प्रवेश: सत्र 2022-23"

सत्र 2022-23 के लिए स्नातक एवं स्नातकोत्तर पाठ्यक्रमों में प्रवेश हेतु महाविद्यालय को बनाया गया सहायता केंद्र

डॉ. अमित भूषण द्विवेदी (नोडल अधिकारी प्रवेश)

जबिक मैं महाविद्यालय के न्यूज़लेटर के लिए इस छोटे से लेख को लिख रहा हूँ, सत्र 2022-23 में प्रवेश हेतु CLC-III के लिए आवंटन पत्र जारी कर दिये गए है तथा ऑफलाइन चरण में प्रवेश हेतु प्रक्रिया आरंभ होने वाला है। ऐसे में इस छोटे से लेख के माध्यम से मैं अब तक महाविद्यालय द्वारा किये गए सत्यापन एवं प्रवेश के आंकड़ों को सांझा कर ना चाहेंगे।

ज्ञात हो कि इसके पूर्व ही मध्यप्रदेश शासन, उच्च शिक्षा विभाग के द्वारा दिनाँक 12.05.2022 को सत्र 2022-23 के लिए राज्य के शासकीय /अनुदान प्राप्त अशासकीय /िनजी अशासकीय महाविद्यालयों में स्नातक तथा स्नातकोत्तर कक्षाओं हेतु प्रवेश नियम, मार्गदर्शी सिद्धान्त, अकादिमक कैलेंडर एवं ऑनलाइन प्रवेश समय-सारिणी जारी कर दिया गए थे। समय-सारिणी के अनुसार सत्र 2022-23 के लिए प्रवेश पंजीकरण 17 मई से आरम्भ हुए।

ऑनलाइन <mark>प्र</mark>वेश प्रक्रिया में भाग लेने हेतु क्या करना है।

सर्वप्रथम प्रवेश हेतु इच्छुक छात्र /छात्राएं इस तथ्य को समझ लें कि प्रवेश प्रक्रिया शत-प्रतिशत ऑनलाइन तथा का गजिवहीन प्रवेश है, अर्थात प्रवेश प्रक्रिया के दौरान छात्र-छात्राओं को नतो कॉलेज आने की आवश्यकता है और नाहीं किसी प्रकार के दस्तावेजों को जमा करना है। उच्च शिक्षा विभाग के द्वारा दिनाँक 11.05.2022 को आयोजित VC के अनुसार इस वर्ष से महाविद्यालय द्वारा प्रवेश प्रक्रिया के दौरान जमा कराए जाने वाले आवश्यक दस्तावेजों यथा TC/Migration को जमा कराने की अनिवार्यता से मुक्त किया गया है।

ऑनलाइन प्रवेश प्रक्रिया में भाग लेने हेतु प्रवेश हेतु इच्छुक छात्र/ छात्राओं को सर्वप्रथम पंजीयन, पात्रता अनुसार महाविद्यालय पाठ्यक्रम का चयन, आवश्यक दस्तावेजों/ प्रमाण पत्रों स्कैन कर अपलोड करना। इसके बाद से प्राप्तांक एवं श्रेणी के आधार पर नियमानुसार महाविद्यालय एवं पाठ्यक्रम का आवंटन होगा। एक बार आवंटन जारी हो जाने पर राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के पिर प्रेक्ष्य में नवीन विषयों का ऑनलाइन चयन करने के उपरांत महाविद्यालय की प्रवेश शुल्क जमा करना होगा। इस वर्ष के प्रवेश से शुल्क जमा करने के उपरांत प्रथम चयनित महाविद्यालय/ पाठ्यक्रम में आवंटन न होने पर अपग्रेडेशन के विकल्प का चयन कर सकते है।

महाविद्यालय में सत्र 202<mark>2-</mark>23 में प्रवेश हेतु पाठ्यक्रमवार उपलब्ध सीट संख्या-

सत्र 2022-23 में महाविद्यालय द्वारा स्नातक प्रथम वर्ष तथा स्नातकोत्तर प्रथम सेमेस्टर के विभिन्न पाठ्यक्रमों प्रवेश हेतु कुल 1250 सीट निर्धारित है जिसमे से 770 स्नातक स्तर पर नई शिक्षा नीति के अंतर्गत सीट है वहीं, स्नातकोत्तर स्तर पर (सेमेस्टर पद्धति) 480 सीट उपलब्ध है। उपलब्ध सीट पर प्रवेश मार्गदर्शी नियम एवं सिद्धांत में वर्णित आरक्षण नियम लागू है। यदि हम उपलब्ध पाठ्यक्रमों के अनुसार सीट की बात करें तो स्नातक स्तर पर बी.ए. प्रथमवर्षहेतुकुल 410, बी.एस-सी(बॉटनी) हेतु 200, बी.एस-सी(गणित) हेतु 50 एवंबी.कॉम. हेतु 110 सीटनिर्धारितहै,

वहीं स्नातकोत्तर पाठ्यक्रमों में अर्थशास्त्र में 20 सीट, इतिहास एवं रसायन शास्त्र में 50 सीट के अलावा हिंदी, समाजशास्त्र, राजनीतिविज्ञान, वनस्पतिशास्त्र, जंतुविज्ञान एवं वाणिज्य में से प्रत्येक के लिए 60 सीट उपलब्ध है।

सहायता केंद्र के द्वारा किये गए सत्यापन की अद्यतन स्थिति-

महाविद्यालय द्वारा स्नातक/स्नातकोत्तर की कक्षाओं में प्रवेश हेतु दस्तावेजों का पंजीकरण के साथ संलग्न दस्तावेजों का सत्यापन ऑनलाइन किया जा रहा है। ऑनलाइन दस्तावेजों की सत्यापन हेतु महाविद्यालय द्वारा 10 सत्यापन अधिकारियों को चिन्हित किया गया है।दिनांक 14 जुलाई 2022 की स्थिति के अनुसार स्नातक स्तर पर आज दिनांक 157 तथा स्नातकोत्तर स्तर 148 आवेदनकर्ताओं के दस्तावेजों का सत्यापन ऑनलाइन किया जा चुका है।ऑनलाइन सत्यापन के अलावा ऑफलाइन सत्यापन/त्रुटिसुधार की 800 से अधिक आवेदनकर्ताओं के दस्तावेजों का सत्यापन किया जा चुका है।

महाविद्यालय में प्रवेश की अद्यतन स्थिति-

दिनांक 14 जुलाई 2022सत्र 2022-23 स्नातक एवं स्नातकोत्तर की विभिन्न कक्षाओं एवं पाठ्यक्रमों हेतु प्रवेश की अद्यतन स्थिति निम्नानुसार है-

क्र. सं.	कक्षा एवं कोड	स्वीकृत सीट	प्रवेश	महिला	पुरुष
1.	बी.ए.	410	352	224	128
2.	बी.एस-सी(बॉट <mark>नी)</mark>	200	158	124	34
3.	बी.एस-सी(गणित)	50	37	15	22
4.	बी.कॉम.	110	45	19	26
स्नातक	योग	770	592	382	210
1.	एम.ए.अर्थशास्त्र	20	10	08	02
2.	एम.ए. इतिहास	50	26	17	09
3.	एम.ए.हिन्दी	60	30	23	07
4.	एम.ए.समाजशास्त्र	60	42	32	10
5.	एम.ए.राजनीतिविज्ञान	60	36	29	07
6.	एम.एस.सी.रसायन शास्त्र	50	38	26	12
7.	एम.एस.सी.वनस्पतिशास्त्र	60	50	38	12
8.	एम.एस.सी.जंतुविज्ञान	60	50	45	05
9.	एम.काम. वाणिज्य	60	37	22	15
स्नातक	त्तिर योग	480	319	240	79
महायोग		1250	911	622	289

40 कविता -

"सपनों की दुनियाँ

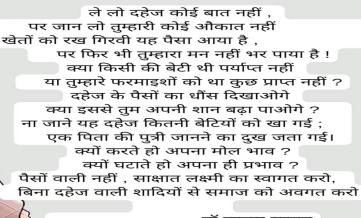
था मुझे भी बहुत दम, अपनी इच्छाएँ पूर्ण करने का मन, पर नहीं मिला अच्छा मार्गदर्शन, वरना हम भी न होते किसी से कम, रहता चारों तरफ़ धन ही धन, और रहते हम नम्बर वन, चलो खैर कोई बात नहीं, समय है कहीं पर हम हैं वहीं, फिर भी करेंगे कोई शुरुआत नयी, अब हममे भी है जुनून समायी, हम भी बनाएंगे अपनी नई परछाई, बाँटेंगे खुशियां और मिठाई, इन्तज़ार है ऐसी ख़बर की, जो मुझे पड़े सुनाई, और देने आए सब मुझे बधाई, बधाई हो बधाई, आपने IAS officer की पदवी है पाई, अचानक आँख खुली मिली तन्हाई, दिल रोया और आँख भर आयी, मालूम हुआ पढ़ते पढ़ते आँख लग आयी, सारी मनोकामनाएं मेरे "सपनों की दुनिया" में आयी, ज़ीर से मेरे दिल ने आवाज़ लगायी, जागो मेरी प्यारी जागो जागो मेरी श्वेता जागो, अब मत खेलो आँख मिचौली, पढ़ो लिखो और खुशियों से भर लो झोली॥

स्वरचित कविता" डॉ. श्वेता श्रीवास्तव रसायन शास्त्र विभाग

50 कविता-



^{*}दहेज एक कुप्रथा,*



डॉ तरन्नुम सरवत सहायक प्राध्यापक(अथिति) (समाजशास्त्र) शासकीय महाविद्यालय अनूपपुर

College Social Contacts: -

- College official Gmail Accountgtdcano@mp.gov.in
- College Websitewww.gtcanuppur.ac.in
- College FB Accounthttps://www.facebook.com/tulsicollege
- College FB Pagehttps://www.facebook.com/mediatulsicoll ege/
- College Twitter Accounthttps://twitter.com/govttulsi?lang=en
- College Workspace IDanuppurgovttulsicollege@gmail.com

आगामी विशेष: -

- दीक्षारम्भ एवं सेतु कार्यक्रम
- वन महोत्सव सप्ताह
- महाविद्यालय के स्थापना दिवस का स्वर्ण जयंती समारोह
- ICT में हैण्ड्स ऑन प्रमाण पत्र कार्यक्रम